लौटने की चाह में बचे रहने की उम्मीद

राहुल
संपर्क- 8669037004

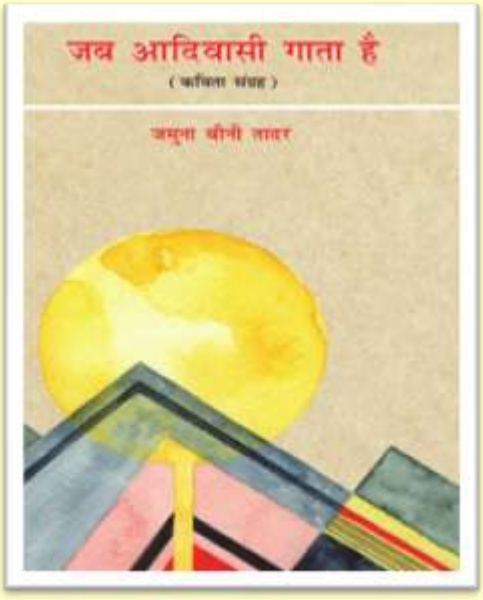

प्रकृति की संवेदनात्मक अनुभूति जब अपनी निरन्तरता और अतीतजीवी जीवन-मीमांसा के साथ शब्दों में उतरती है तो वह कविता के रूप में प्रस्फुटित होती है। ऐसी कविताएं किसी विध्वंस क्रांति/प्रतिक्रांति की बात नहीं करती और न ही प्रतिरोध की, बल्कि ये कविताएं विध्वंस के बाद उग आई उस दूब की तरह हैं जो बार-बार उखाड़े जाने के बाद भी उग आती हैं, अपने बचे रहने की अदम्य इच्छा शक्ति के साथ। दूब की जीवंतता यह बतलाती है कि सब कुछ ख़त्म नहीं हुआ है, अभी भी बहुत कुछ बाकी है, बहुत कुछ शेष है जिसे सहेजकर रखा जाना मनुष्यता की बेहतरी के लिए जरूरी है।

जमुना बीनी तादर का कविता संग्रह 'जब आदिवासी गाता है' इसी भाव बोध के धरातल का उत्स है। प्रकृति के साथ सहजीवता का संबंध और बचे रहने की उम्मीद इस कविता संग्रह का केंद्रीय भाव है। अतीत का मोह इतना कि वर्तमान का सुविधाभोगी जीवन नीरस लगने लगता है, मन बार-बार बचपन की यात्रा पर निकलने की छटपटाहट के साथ उसे एक बार फिर से पाना चाहता है। इस कविता संग्रह की पहली कविता इसी हवाले से रची गई है। रची भी क्या गई है, युवा कवयित्री जमुना बीनी स्मृतियों में उतरकर विस्मृति होते 'जीवन दर्शन' को एक बार फिर से आवाज देती हैं। 'वे अलसाये दिन' भी क्या दिन थे जहां संपन्नता की अभावग्रतता के साथ प्रसन्नता की कोई कमी न थी। वे दिन तो सपने बुनने के दिन थे। प्रकृति की नैसर्गिक सुंदरता हर किसी में व्याप्त थी और हर कोई अपनी इसी नैसर्गिकता के सहारे अपने सुंदरतम संसार की कल्पना करता। *"धान की/ हरी-हरी बालियों के बीच / रंग बिरंगी तितलियाँ/ आँख मिचौली खेलतीं/ मेरा अल्हड़ मन भी/ कोई रंगीन सपने बुनता।" वह दुनिया ऐसी थी जहां कोई प्रतिद्वंद्विता न थी, एक दूसरे के लिए प्रतिबद्धता, प्रेम और परस्पर सहयोग की भावना थी। "बांस के बने/इस घर में/ चौदह अंगीठियाँ हैं /... इन अंगीठियों के/ अगल-बगल / पूरा परिवार बैठकर दिन भर की/ किस्से-कहानियाँ/ एक दूसरे को सुनाता/ जल्द ही/ खा पीकर/ सो जाते सब/ कल फिर/मुँह अंधेरे सबको/ खेतों के लिए /निकलना है।"* बतकही के अंदाज में व्यक्त अतीत वर्तमान को उलाहना देता है कि कैसे कुछ टूट गया और बहुत कुछ

छूट गया। राजेश जोशी के शब्दों में कहें तो 'टूटने के क्रम में टूट चुका है, बहुत कुछ-बहुत कुछ।' अब कोई नहीं रहता इन बांस के घरों में, अब नहीं जलती एक साथ इतनी अंगीठियाँ कि घुप्प अंधेरे को उजास में बदल दें। एक रेखीय विकास मॉडल ने बहुत कुछ छीन लिया है हमारे जीवन से। अब न बतकही है, न नृत्य है, न गीत है, न संगीत है और न ही सपनों की वह रंग-बिरंगी दुनिया। एक ऐसी दुनिया जहां न ही एकरसता थी और न ही एकाकीपन। तितलियाँ ख़्वाब न थी, बल्कि सब कुछ तितलियों जैसा ही यथार्थ था।

"अब हमारा घर/ बनाता है कंक्रीट से/अब हम नहीं/ सोते बहुत जल्द/रात भर/ टी. वी., मोबाइल फोन/ या लैपटॉप में डूबे रहते हैं/ हमें जोड़े रखता है/ एस. एम. एस., फेसबुक/ और व्हाट्सएप्प अब।" इस संग्रह की अधिकांश कविताएं जीवन के रागात्मक बोध को व्यक्त करती हैं जो एकात्म होती दुनिया में कहीं खो सी गई हैं। अति भोगवादी हो चले समाज में जब व्यक्ति का टूटन एवं बिखराव इस कदर होता है कि वह अपने आपको अकेला पाता है, उसे किसी का सहारा नहीं मिलता और अपनेपन की क्षोभ में वह अतीत की डोर थामें स्मृतियों के सहारे उस जीवन-यथार्थ पर निकल जाना चाहता है जहां सब कुछ सबके लिए है। बचे रहने की उम्मीद लिए वह लौट जाना चाहता है उन्हीं जगहों पर जहां से शुरू की थी उसने अपनी जीवन यात्रा। 'बचे रहने की उम्मीद' शीर्षक से लिखी गई कविता में कवयित्री ने आदिवासी जीवन की व्यथा को संवेदनात्मक अभिव्यक्ति दी है। *"तुम्हारे/ आदिवासी-बोध ने बतलाया/ तुम्हें पहाड़ों/ और/ जंगलों की ओर/ भागना चाहिए/ वहाँ ऊपर/ दुश्मनों से/ महफ़ूज रहते आए/ अनगिनत काल से। ... तुम आश्वस्त होते हो/ कि /तुम्हारे लोग तुम्हारे बाद भी जीयेंगे/ तुमसे अधिक जीयेंगे/ संसार को बतलाने/ तुम्हारी अद्भुत-अनोखी संस्कृति/ आदिवासी संस्कृति के बारे में"* लौटना महज अपनी खुशी के लिए नहीं है बल्कि दीर्घजीविता के दर्शन को भावी पीढ़ी को सौपना है। आने वाली पीढ़ी को बताना है अपनी अद्भुत-अनोखी संस्कृति के बारे में कि कैसे किताबों के काले अक्षर उन्हें असभ्य एवं बर्बर करार देने पर आमादा हैं। गाँव को जिस तरह से

'ग्लोबल गाँव' में बदल देना चाहते हैं उसकी आधारशिला आदिवासियों के प्राकृतिक संसाधनों की लूट पर रखी गई है। विकास और ग्लोबल गाँव की अवधारणा के तहत ही इन्हें सभ्यता का पाठ पढ़ाया जा रहा है और विकास के नाम पर जल, जंगल जमीन की लूट मची हुई है। जमुना बीनी अपनी कविताओं में इसके दोनों पक्षों की बारीक पड़ताल करती हैं। 'एक रोचक कथा' शीर्षक कविता के माध्यम से वह लूट की रोचक कथा बयां करती हैं कि कैसे आदिवासी इनके लालच में फँसता है और मुआवज़े के नाम पर बाद में अपने आपको ठगा महसूस करता है। *"जमीन अधिग्रहण के बदले/ मुआवजा का/ लालच दिखाई/और/ किसानों ने/ पहली दफा/ मुआवजे के/ पैसों का/ स्वाद चखा/ उनके जीभ को/ यह जायका/ बहुत भाया/फिर/ होना क्या था/ किसानों की/ किसानी छूट गई/ ... कितनी रोचक/ और/ मनोरंजक है/ किसानी से/ गुंडागर्दी के/ रूपांतरण की यह कथा।"* कवयित्री इस 'रोचक कथा' के माध्यम से शोषण को व्यक्त

करती हैं। पूरे विश्व में अपने वैयक्तिक अस्मिता को बचाने के पक्ष में रहकर आदिवासी जिस अस्मिता के लिए संघर्ष कर रहा है वह आज ख़तरे में है।

जमुना बीनी की कविताओं में जो बार-बार लौटने का आग्रह है वह यथार्थ से पलायन नहीं है, बल्कि इसे नंग यथार्थ से मुठभेड़ के रूप में देखा जाना चाहिए, जिसे तथाकथित विकास की एक खास तरह की पट्टी से ढक दिया गया है। उस पट्टी को हटाने के लिए कवयित्री को लौटना जरूरी लगता है। इसलिए वह बार-बार लौटती भी हैं। मिट्टी का नेह कुछ ऐसा कि वह वापसी की राह दिखाती है। *"नातों-रिश्तों के/ जहान में/ एक नाता /और भी है/ नाता/ मिट्टी का।"* कवयित्री का जो नाता है, अपनी मिट्टी से है, अपने देस से है, उसकी सुद्बुध लेने वह लौटना चाहती हैं। अपनी मिट्टी की आत्मीयता उन्हें बिछुड़ने नहीं देती, बल्कि वापस बुलाती है- *"और रिश्तों के/ टूटन में/ जो दर्द होता है/ मिट्टी से/ उखड़ने का/ दर्द भी/ बहुत तेज होता है।"* विस्थापन का दर्द अस्तित्व के साथ ही परंपरागत ज्ञान एवं भाषाई अस्मिता पर भी प्रश्न चिन्ह लगाता है। वर्तमान समाज के नव मध्यवर्गीय युवक अपनी तटस्थता की नीति एवं उपभोग की जीवन पद्धति में मग्न है। भूमंडलीकरण के इस दौर में आदिवासी समाज जो परंपरागत जीवन शैली जी रहा है , उनके लिए नित नए विस्थापन की नीति राज्य सरकारें सांम्राज्यवादी ताकतों के साथ मिलकर बुन रही हैं। आदिवासियों का विस्थापन केवल जल, जंगल, जमीन का विस्थापन नहीं, बल्कि वह अपनी भाषा से, अपनी संस्कृति से, अपने स्वाद से एवं अपने जीवन-मूल्यों से भी विस्थापित हैं। 'जब आदिवासी गाता है' शीर्षक से लिखी गई कविता आदिवासी जीवन का निचोड़ बताने का सामर्थ्य रखती है कि कैसे आदिवासी समाज पर अज्ञानी, असभ्य, मूर्ख, भावनाओं एवं संवेदनाओं को व्यक्त न होने वाली भाषा का तोहमत लगाया जाता है। *"विलुप्त होती/ इस भाषा पर/ अक्सर सपाटबयानी का/ आरोप लगा। माखौल/ उड़ाते रहे/ कि/ इस भाषा की/ वाक्य-रचना कमजोर/ और/ व्याकरण सीमित है। इसलिए/ जीवन की/मूलभूत जरूरतों/ और/ मन के/ सरल भाव ही/ इसमें/ अभिव्यंजित हो पाती हैं/ जीवन की जटिलताएँ/और/मन के द्वंद्व नहीं।"* यह जो आरोप है, वह अपने को सुपर बताने के तहत लगाए गए हैं। निजी संपत्ति ने जो विकार पैदा किए वह भाषा में भी दिखता है।

आदिवासी जीवन उद्दाम जीवन है, उसमें जीवन की जटिलता नहीं है और न ही किसी प्रकार का द्वंद्व है, इसलिए भाषा सहज एवं सरल है। भाषा का सहज एवं सरल होना यह बतलाता है कि जीवन कितना सरल है। दुरूह जीवन बोध वाले समाजों में भाषा भी दुरुह एवं कठिन होती है। अपने को सभ्य एवं आधुनिकतम कहने वाला समाज अपनी भाषा के तर्कजाल से अपनी कमियों को ढकने का काम करते हुए आदिवासी समाज का दुष्प्रचार करता है। *"इस भाषा ने/ कभी कुतर्क/नहीं जाना/और/ सभ्यों की भाषा/ तर्कजाल से/ भरी है।"* भाषा का सवाल अस्मिता का सवाल है। अपनी भाषा में अपनी भावनाओं को न व्यक्त कर पाना सबसे दुखदायी है। *'युवा अरुणाचली'* कविता इस बात की गवाही देती है कि कैसे भाषा

का साम्राज्य खड़ा किया जाता है और एक संस्कृति को भाषा के माध्यम से नष्ट किया जा सकता है। *"युवा अरुणाचली/ अब नहीं बोलते/ अपनी बोली"* भाषा का मरना एक इंसान के मरने से कहीं ज्यादा खतरनाक है। भाषा और ताकत का ही खेल ही कि हम दूसरे भाषा-भाषी नायक-नायिकाओं को नहीं जानते। 'तथाकथित' शीर्षक कविता में कवयित्री की यह शिकायत जायज़ भी लगती है। 'देहात की याद', 'नदी के दो पाट', 'सुनहरा भविष्य', 'फुरसत', 'पहाड़', 'नाजुक तार', 'माँ', 'मिथुन' 'वे और हम', 'चाँद का कराह', 'लौट आओ' आदि कविताएं लौटने की इच्छा लिए वहाँ लौटना चाहती हैं जहाँ नीला आकाश धूसर नहीं दिखता, जहाँ नदियां गाती हैं और जहाँ जंगलों में अकेले में भी डर नहीं लगता। यह दीगर बात है कि लौटने की यह चाह पूरी नहीं होती और व्यक्ति नदी का दो पाट होकर रह जाता है। यह जरूर है कि लौटना उसी रूप में नहीं हो पाता जिस रूप में वह लौटना चाहता है। वह अपनी बोली-भाषा में लौटना चाहता है, अपने स्वाद में लौटना चाहता है। अपने ख़्वाब में लौटना चाहता है, जहां जीवन रागिनियाँ सप्तम स्वर के साथ मिलकर सब कुछ संगीतमय बना देती हैं जहां उसका बोलना ही गीत बन जाता है। वह हर उन जगहों में लौटना चाहता है जहां अब भी बाकी है जीवन जीने की जिजीविषा। नदियां, पहाड़ और जंगल उसे वापस बुलाते हैं।

जमुना बीनी तादर का यह कविता संग्रह 'जब आदिवासी गाता है' विषय वैशिष्ट्य के साथ सहज रूप में अभिव्यक्त हुआ है। संवेदना से सराबोर युवा कवयित्री की भाषा में एक प्रवाह है, जो भावों को सहज ही अभिव्यक्त करता है। एक ऐसी भाषा जिसे कवयित्री ने सप्रेम ओढ़ा है, ऐसी भाषा जिसका सच्चे अर्थों में नाभिनाल से कोई संबंध नहीं है। जमुना की कुछ कविताओं में संवाद की अधिकता है और कुछ में विवरण। ऐसा जान पड़ता है कि अरुणाचली कवयित्री का अन्तर्मन अंत:संचार कर संवाद करता है जो कविताओं में प्रतिध्वनित है। संचार के आधुनिक तकनीक के सहारे भी संवादहीनता का यह दौर समाप्त नहीं होता बल्कि बढ़ता ही जा रहा है तभी तो प्रकृति की तरह उद्दाम मन ऐसे में प्रकृति का साहचर्य ढूंढता है। वह लौट जाना चाहता है अतीत के उन्हीं पगडंडियों पर जिस पर चलकर कंक्रीट के जंगल तक का सफर तय किया है। मन के सांकल को उद्दाम प्रकृति हौले से छू भर देती है और यह बावरा मन अप्रतिम प्रकृति की ओर लौट जाने को बेचैन हो उठता है।

पुस्तक परिचय: जब आदिवासी गाता है (कविता संग्रह)/ कवयित्री- जमुना बीनी तादर
प्रकाशक- परिंदे प्रकाशन, नई दिल्ली / **प्रथम संस्करण-** 2018, मूल्य- ₹ 200/-

(**लेखकीय परिचय :** लेखक युवा समीक्षक हैं। डॉ. राहुल ने लतीफों/ जोक्स एवं लोक-साहित्य का जेंडरगत दृष्टि से विशेष अध्ययन किया है। वर्तमान में वह लोक-साहित्य से संबद्ध होकर कई महत्त्वपूर्ण विषयों पर स्वतंत्र लेखन कर रहे हैं।)